International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications, ISSN: 2319-7471
Vol. 3 Issue 2, February-2014, pp: (52-56), Impact Factor: 1.147, Available online at: www.erpublications.com

भारत में बैंकिंग प्रणाली का इतिहास

डॉ. सुशील कुमार शर्मा[1], डॉ दिलीप पीपाड़ा[2]

[1]प्राध्यापक इतिहास विभाग एमबीडी राजकीय महाविद्यालय कुश्लगढ़ बांसवाडा
[2]प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय महाविद्यालय नाथद्वारा राजसंमद

वर्तमान मे हमारे जीवन मे बैकों की अहमियत लगातार बढ रही है वर्तमान मे हमारी वित्तिय व्यवस्था की बैकिग के बिना कल्पना भी किया जाना संभव नही है। आज हमे हर कार्य के लिए किसी ना किसी रूप मे बैकों पर निर्भर रहना होता है चाहे व राशि को कही और भेजना हो, किसी का आनलाईन भूगतान करना हो, हमारे दैनिक जीवन के सामान्य भूगतान जैसे बिजली, पानी, टेलिफोन, बीमा,गृहऋण, वाहन ऋण आदि की किस्त का भूगतान करना हो या अनेकों प्रकार के अन्य कई ऐसे कार्य है जिनका बिना बैंकिंग के संभव है ही नहीं। सही मायने मे अतीत मे जो महत्वपूर्ण अविष्कार हुये है उसमे यत्रं विज्ञान मे बिजली का यातायात मे पहिये का उसी प्रकार से वित्तीय जगत मे बैंकों का बहुत ही महत्वपूर्ण अविष्कार कहा जा सकता है।

भारत में बैंकिंग प्रणाली का इतिहास व प्रकार

सही मायने मे बैंक हमारे दैनिक जीवन मे इतने उपयोगी बन चुके है कि इनके बिना हम अपने फाइनेंशियल मैनेजमेंट की कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। प्राचीन काल से ही हमारे यहा पर बैंकिग व्यवस्था किसी ना किसी रूप मे विधमान थी परन्तु उसका आज जैसा स्वरूप नही था। वर्तमान मे बैंक. रोज आधुनिक और नई तकनीक ला रहे है व हमारे हर प्रकार के भूगतान व प्राप्तियों को सरल से सरलतम बनाने का प्रयास कर रहे है। पर यदि देखा जाये तो हमारे देश के बैंकों का इतिहास भी कम रोचक नहीं है. बैंकों की सामान्य परिभाषा से देखा जाए तो ऋग्वैदिक काल से ही मुद्रा को सहेजने वाली एजेंसियों और उन पर ब्याज देने वाली संस्थाओं का अस्तित्व रहा है. भारत में बैंकिंग के मूल को पुरातन महाजन परम्परा से भी जोड़ कर देखा जा सकता है जो लोगों को जरूरत के समय पैसे उधार देते थे और लोगों के धन को विदेश जाने और आने के दौरान हवाला के जरिये उन तक पहुंचाते थे और इसके बदले कुछ रकम वसूल करते थे।.भारत मे तो प्राचीन काल से महाजन व साहुकार के रूप मे इस प्रकार की जातियां होती थी जिनका वंश परम्परागत कार्य ही रूपया उधार देना व लेना होता था।

यदि हम प्राचीन काल के व्यापार का अध्ययन करे तो यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है कि प्राचीन काल मे देश का विदेशों के साथ बैंकिग व्यवहार था। मिस्र और ऐसी ही दूसरी पुरातन सभ्यताओं के साथ व्यापारिक लेन–देन के दौरान भी ऐसी ही संस्थाओं का जिक्र मिलता है लेकिन उनपर ज्यादा शोध और संदर्भ सामग्री उपलब्ध नहीं है. आधुनिक बैंकिंग जिसे आज हम उपयोग कर रहे है, इसका वर्तमान स्वरूप मूल रूप से यूरोपियन्स की ही देन है और आज भी इस प्रणाली में ज्यादातर नये प्रयोग उन्हीं के द्वारा हो रहे हैं. परन्तु वर्तमान मे इस क्षैत्र मे इतने अधिक नये प्रयोग प्रचलीत हो गये है कि हमारी बैंकिंग व्यवस्था पहले से कई अधिक उपयोगी हो गयी है।

भारत में बैंकिंग का इतिहास

प्राचीन भारत में बैंकिंग प्रणाली व बैंकिंग का इतिहास को समझने के लिए हमे प्राचीन काल की व्यवस्था का गहन अध्ययन करना होगा। प्राचीन भारत में जब सभ्यता अपने पूर शिखर पर थी, यहां चारों तरफ ऐश्वर्य और पैसे का बोलबाला था देश को सोने की चिडिया के नाम से जाना जाता था। राजा महाराजाओं के पास आपार समृद्धि हुआ करती थी।. ऐसे में पैसे के प्रबंधन के लिए बैंक जैसी संस्था की जरूरत पड़ी. वेदों में कुसीदिन नाम के पद का उल्लेख मिलता है जो उस दौर में पैसों का प्रबंधन किया करता था. इसका उल्लेख सूत्रों और

जातकों तक में मिलता है। सही मायने के जब से मानव सभ्यता ने जन्म लिया है तब से ही किसी ना किसी रूप मे बैंकिग व्यवस्था का प्रचलन कहा जा सकता है हांलाकी उसका रूप वर्तमान बैंकिग प्रणाली से कुछ अलग हो सकता है जैसे प्राचीन काल मे कुछ धन को भविष्य मे प्रयोग लेने की दृष्टि से जमीन मे दबा कर रख दिया जाता था वह भी बैकिंग का ही एक उदाहरण कहा जा सकता है। इससे समझ में यह आता है कि धन का यह प्रबंधक 2000 ईसा पूर्व से लेकर 400 ईसा पूर्व तक लगभग 1600 सालों तक लोगों के बीच लेन–देन का प्रमुख स्रोत बना रहा.

इसी बीच इन्हीं स्रोतों में इस संस्था के अवसान या बुराइयों का उल्लेख भी मिलने लगा था जिससे इस बात का पता चलता है कि समय के साथ इनकी विश्वसनीयता प्रभावित हुई और कालान्तर में यह समाप्त हो गए। यदि प्राचीन ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया जाये तो उनमे किसी ना किसी रूप मे बैंकिग का कार्य स्पष्ट रूप से देखने को प्राप्त हो जाता है। जातकों में सूद पर उधार देने का उल्लेख भी सामने आता है, उधार दिए जाने के लिए किए जाने वाले करार को यहां ऋण पत्र या ऋण पन्ने की तरह उल्लेखित किया गया है। इसी प्रकार से प्राचीन काल मे जो हुण्डी का उल्लेख मिलता है वह भी उधार लिये गये धन का एक प्रकार से ऋण पत्र ही होता था।. कौटिल्य अपनी किताब अर्थशास्त्र में भी इन ऋण पत्रों का उल्लेख करते हैं, वे इसे ऋण आलेख कह कर संबोधित करते हैं। इसी प्रकार से मौर्य काल के आते–आते राज्य सत्ता बैंकिंग का काम करने लगती है, इसके प्रमाण सामने आते है. उल्लेख मिलता है कि राज्य आदेश पत्र के माध्यम से व्यापारियों को पैसा चुकाने के वादा पत्र दिया करता था जो कि स्पष्ट रूप से बैंकिग का एक प्रमाण कहा जा सकता है।. यह प्रथा बाद में व्यापारियों ने भी अपना ली और 185 ईसा पूर्व आते–आते ऐसे वादापत्र आम प्रचलन में आ गए।

मुगलकालीन दस्तावेजों में दो तरह के ऋणपत्रों का उल्लेख मिलता है, दस्तावेज ए इन्दुतलाब को मांग पर जारी किया जाता था जो कि वर्तमान के बचत व चालु खाते की तरह होता था जबकि दस्तावेज ए मियादी एक खास समय के बाद ही कैश किया जा सकता था, यह उस दौर के फिक्स डिपॉजिट जैसा था.। ये दस्तावेज शाही खजाने से ही जारी किए जाते थे लेकिन इसके समानान्तर एक और व्यवस्था ने जन्म ले लिया था जिसे महाजनी भी कहा जाता था.। महाजनों के द्वारा दिये गये दस्तावेजों की भी साख उतनी ही होती थी जितनी की शाही दस्तावेजों की। तात्कालीन समय मे उधार दिये गये रूपयों पर ब्याज कितना लिया जाये यह व्यापारी या महाजनों पर निर्भर होता था सरकार या राजा का इसमे किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही होता था इस कारण से उस समय मे महाजनों व साहुकारों के द्वारा मनमाना सूद वसूलता किया जाता था। इसी दौर में व्यापारियों ने विदेशी व्यापार के लिए पहली बार हुंडी का इस्तेमाल करना शुरू किया जो एक तरह का क्रेडिट कार्ड का प्राचीन रूप कहा जा सकता है.। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि देश मे प्राचीन काल से ही बैकिग प्रणाली विधमान थी हांलाकि उसका रूप वर्तमान बैंकिंग प्रणाली से भिन्न था।

भारत में आधुनिक बैंकिंग की शुरूआत

भारत में आधुनिक बैंकिंग की शुरूआत इस देश में औपनिवेशिक काल के शुरूआत के साथ ही माना जा सकता है, जब आज से लगभग 200 साल पहले डच, अंग्रेज और फ्रांसिसी व्यापार के उद्देश्य से भारत आए। इनमें से अंग्रेजों को ही यहां पांव जमाने का अवसर मिला. व्यापार के साथ उन्हें अपनी आय और मुद्रा के प्रबंधन के लिए बैंक की जरूरत पड़ी और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने पहले पहल 3 बैंकों की नींव भारत में रखी. चुंकि सबसे पहले अंग्रेजों का प्रभाव बंगाल में ही बढ़ा इसलिए पहला बैंक बंगाल में ही 1809 बैंक ऑफ बंगाल के नाम से खोला गया। इसे ही भारत के प्रथम बैंक के नाम से जाना जाता है। इसके बाद उन्होंने अपने दूसरे प्रभाव वाले क्षेत्रों बॉम्बे और मद्रास प्रसीडेंसी में 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे और 1843 में बैंक ऑफ मद्रास की शुरूआत की. 1857 की क्रांति के बाद जब भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी को समाप्त कर दिया गया और शासन सीधे ब्रिटेन की महारानी के तहत आ गया तो इन तीन बैंकों का आपस में विलय करके इन्हें नया नाम इंपीरियल बैंक ऑफ इण्डिया मे नाम से जाना जाने लगा।. यह इंपीरियल बैंक ही आजादी के बाद भारत का प्रमुख बैंक बना जिसे 1955 में नाम परिवर्तित करके भारतीय स्टेट बैंक कर दिया गया. भारत का यह

सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक था। इसके अलावा भी आजादी से पहले अनेक बैंक प्रचलन मे थे परन्तु उनमे से अधिकांश का व्यापार एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रहने के कारण वह इतने अधिक लोकप्रिय नही हो पाये।

आजादी के बाद भारत में बैंकिंग

देश के तौर पर बैंकिंग संस्थाओं को रेगुलेट करने और सरकारी मुद्रा के प्रबंधन के लिए भी भारत सरकार को एक संस्था की जरूरत महसूस हुई तो 1949 में भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और आजादी के बाद भी केन्द्रिय बैंक के तौर पर इसकी भूमिका को यथावत रखा गया।. रिजर्व बैंक को भारत में बैंकिंग को रेगुलेट करने के सभी अधिकार भी दे दिए गए. इसके बाद भारत के बैंकिंग क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन तब आया जब भारत सरकार ने 1959 में भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम के माध्यम से देश के आठ क्षेत्रीय बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया और इन्हें भारतीय स्टेट बैंक का अनुषंगी बना दिया. इसमें स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर, स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर, स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद, स्टेट बैंक ऑफ इंदौर, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर और स्टेट बैंक ऑफ पटियाला प्रमुख थे। सरकार के द्वारा किया गया यह राष्ट्रीयकरण का कार्य काफी सफल रहा व इससे देश मे बैंकिंग की शाखाओं का तेजी से प्रसार हुआ व इससे उत्साहित होकर भारत सरकार ने इसी तरह का एक बड़ा कदम 19 जुलाई 1969 को उठाया और देश के प्रमुख 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। यह पहले से भी बड़ा कदम था इससे भारतीय बैंकों की विश्वसनियता में इजाफा हुआ और भारतीय बैंकिंग प्रणाली मजबूत हुई। इसके बाद लंबे समय के बाद 15 अप्रेल 1980 को 6 निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। 1991 के बाद देश मे नयी प्रकार की अर्थव्यवस्था को अपनाया गया जिसमे हमने उदारीकरण निजीकरण व वैश्वीकरण की नीति को अपनाया जिससे भारतीय बैंकिंग क्षेत्र ने 1993 में घरेलू बैंकों को बैंकिंग गतिविधियां करने की अनुमति दे दी और प्राइवेट क्षेत्र के बैंक भी अब सार्वजनिक बैंकों की तरह भारतीय जनता को अपनी सेवाएं देने लगे.

भारत में बैंकिंग के प्रकार

भारत मे यदि कार्य के हिसाब से बैंकों का विभाजन किया जाये तो यहा पर कई प्रकार के बैंक वर्तमान मे कार्य कर रहे है परन्तु बैंकिंग के किस्मों की बात करते हुए एक बात साफ कर देनी चाहिए, कि इनके काम में इतना ज्यादा फर्क नहीं है कि आप इनके बीच अंतर की एक मोटी लाइन खींच पाएं. बल्कि बहुत महीन अंतर की वजह से इनके काम करने का तरीका बदल जाता है और ये अलग–अलग तरह के क्लाइंट्स को अपनी सेवाएं देती हैं.

1. वाणिज्यिक बैंक देश मे कई वाणिज्यिक बैंक भी काम कर रहे है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता है यह बैंक मूल रूप से वाणिज्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए काम करता है.

इसके ग्राहक सिर्फ व्यापारी या बिजनेसमैन होते हैं जो यहां अकाउंट ओपन करवाते हैं। इस तरह के कस्टमर्स को अपने व्यापार के अनुरुप लेन–देन के लिए अलग तरह की सेवाओं और बैंक गारंटी की जरूरत होती है, जो इस तरह के बैंक उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह के बैंक बड़ी राशियों के लेन–देन का प्रबंधन करते हैं और उन्हें मैनेज भी करते हैं।

2.केन्द्रीय बैंक किसी भी देश के बैंकिग व्यवसाय मे केन्द्र मे जो बैंक होता है उसे केन्द्रीय बैंक के नाम से जाना जाता है। ये बैक प्रत्येक देश का एक होता है जो देश की मौद्रिक व्यवस्था के केन्द्र मे होता है। सही मायने मे दुनिया का हरेक देश अपनी मुद्रा को संभालने के लिए ऐसी संस्था का निर्माण करता है, जो उसकी मुद्रा के चलन पर नजर रखे उसे मूल्यवान बनाने के लिए काम करें। भारत में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया सेंट्रल बैंक की भूमिका का निर्वहन करता है। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की मजबूती और कमजोरी का ज्यादातर हिस्सा इन केन्द्रीय बैंक द्वारा बनाई गई नीतियों पर काम करता है। केन्द्रीय बैंक मुद्रा का प्रबंधन करने के साथ ही उसके अवैध उपयोग और अवमूल्यन पर भी नजर रखते है। केन्द्रीय बैंक अपने देश के सभी बैंकों की कार्यप्रणाली को लाइसेंसीकरण भी करती है, और उनके लिए काम करने के लिए आदर्श गाइडलाइन्स का भी निर्माण करती है।

3. ऑनलाइन बैंक वर्तमान मे आनलाईन बैकिंग सुविधाओं को प्रदान करने वाले बैंकों का चलन काफी बढ़ गया है। इस प्रकार के बैंकों का चलन इंटरनेट के प्रचलन में आने के बाद हुआ है, और यह अपनी सारी सेवाएं वेब के माध्यम से ही उपलब्ध करवाती हैं। यहां भी ग्राहक अकाउंट खोलता है और अपना वित्तिय लेन–देन अपने ऑनलाइन अकाउंट के माध्यम से करता है। भारत में अभी इसकी शुरूआत हुई है, हमारे देश में ऑनलाइन वॉलेट्स और मोबाइल वॉलेट्स इन ऑनलाइन बैंकिंग की प्रारंभिक अवस्था में माने जा सकते हैं।

4. रिटेल बैंक यह वे बैंक है जिनसे जनसामान्य का अधिक काम पडता है यह बैक हमारे लिए वे सभी प्रकार की सेवाए प्रदान करते है जो कि सामान्य रूप से बैंकिंग सेवाओं मे सम्मिलित होती है। जिनके बारे में हम सभी जानते हैं और यह दुनिया की आबादी के सबसे बड़े हिस्से को अपनी सेवाएं देते हैं.।यह बैंक आम आदमी के लिए काम करते हैं और उनके पैसों का प्रबंधन करते हैं.।कोई भी व्यक्ति कुछ कागजी खानापूर्ति के बाद यहां अपना बचत या चालू खाता खोल सकता है.।यह बैंक अपने ग्राहक को बचत पर ब्याज देता है और जरूरत पड़ने पर दिए जाने वाले उधार पर ब्याज वसूलता है.।यह बैंक अपने ग्राहकों को सुविधा के नाम पर डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड और चेक जैसी सुविधाएं उपलब्ध करवाता है.।इस तरह के बैंक का व्यापारिक ढांचा मूल रूप से कम ब्याज पर पैसे लेकर ज्यादा ब्याज पर उपलब्ध करवाने वाले बिजनेस मॉडल पर काम करता है।

5.क्रेडिट यूनियन्स या लघु ऋण संगठन या स्वयं सहायता समूह भारत मे नाबार्ड के अथक प्रयासों के चलते पिछले कुछ समय से माइक्रो क्रेडिट का प्रचलन बढ़ा है। क्रेडिट यूनियन्स या लघु ऋण संगठन मूल रूप से एक स्वयं सहायता समूह होते हैं जो किसी बैंक की तरह ही काम करते हैं। यह आम उपभोक्ता की जगह सिर्फ अपने सदस्यों को ही सेवा दे सकते हैं। इस तरह के संगठन अपने सदस्यों को न नफा न नुकसान को आधार बनाते हुए जरूरत पर पैसा उधार देते हैं और उनसे आसान किस्तों में भुगतान लेते हैं। इन संगठनों द्वारा उधार दिया जाने वाला धन भी सदस्यों के सहयोग से ही इकट्ठा किया जाता है, जिस पर किसी तरह का ब्याज नहीं लिया जाता है या फिर बहुत कम ब्याज दिया जाता है इस प्रकार के ऋणों के पुर्नभूगतान की जिम्मेदारी पूरे समूह की होने के कारण से इस प्रकार के ऋणों के डूबने की संभावना बहुत ही कम होती है इस कारण से इस प्रकार के ऋणों का प्रचलन पिछले कुछ समय से काफी बढ़ गया है।

6. निवेश बैंक वर्तमान मे बैंकों का काम केवल रूपया जमा करना व उधार देना ही नही रह गया है वरन ये ग्रहकों को उनकी बचत को बेहतर ढग से निवेश करने का विका करने का विकल्प भी उपलब्ध करवाते है इस प्रकार के बैंकों को निवेश बैंक की संज्ञा दी जाती है। निवेश बैंक अपनी फाइनेंशियल विशेषज्ञता के लिए जाने जाते हैं और इसी वजह से व्यवसायी इनकी सेवाएं लेते हैं। अगर कोई बिजनेस मैन अपनी कंपनी को शेयर बाजार में लिस्टेड करना चाहता है या फिर अपनी कंपनी के लिए कोई इन्वेस्टर खोजना चाहता है, तो ऐसे बैंक उसकी सहायता करते हैं। ये बैंक अपने ग्राहकों को निवेश दिलवाते हैं और कई बार उनको दिलवाये गए निवेश की गारंटी भी लेते हैं। इस तरह के बैंक अपने ग्राहक के बिजनेस की रेटिंग करने के साथ ही उसे और बेहतर बनाने के सुझाव भी देते हैं।

7.म्यूचुअल बैंकिंग म्यूचुअल बैंकिंग काफी कुछ क्रेडिट यूनियन बैंकिंग से मिलती जुलती होती है, लेकिन जहां क्रेडिट यूनियन्स सिर्फ व्यवसाय करने के लिए उधार देते हैं वहीं म्यूचुअल बैंकिंग निजी जरूरतों को ध्यान में रखकर अपने सदस्यों को ऋण देती है। इस बैंकिंग में भी उधार लेने और देने का काम सिर्फ सदस्यों के बीच ही किया जाता है, और यह भी न नफा न नुकसान के सिद्धान्त पर काम करती हैं। इस तरह की बैंकिंग में एक सदस्य से पैसा लेकर दूसरे सदस्य को मुहैया करवाया जाता है और इसी प्रक्रिया को बार–बार दोहराया जाता है। इस तरह की बैंकिंग विकासशील और पिछड़े हुए देशों में ज्यादा प्रचलन में है क्योंकि इसके लिए लाइसेंसिंग प्रक्रिया बहुत आसान होती है या फिर नहीं होती है।

उपसंहार उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत मे बैंकिग का विकास अलग अलग समय पर आवश्यकता के अनुसार हुआ है देश मे वर्तमान के काफी अधिक प्रकार के बैंक कार्य कर रहे है जो अपने

ग्राहकों को कई प्रकार की सुविधाये प्रदान करते है। वर्तमान मे युवाओं मे आन लाईन पेमेन्ट करने का प्रचलन बहुत ही अधिक बढ गया है यह सभी देश मे बैंकिग के मजबूत नेटबर्क के विस्तार के चलते संभव हो पाया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

[1]. Santosh Kumar Das (1980). The economic history of ancient India. Cosmo Publications.–. ISBN 978-81-307-0423-4.
[2]. Chris A. Gregory (1997). Savage Money: The Anthropology and Politics of Commodity Exchange. Taylor & Francis.. ISBN 978-90-5702-091-9
[3]. Md. Aquique (1974). Economic History of Mithila. Abhinav Publications.. ISBN 978-81-7017-004-4.
[4]. "Evolution of Payment Systems in India". Reserve Bank of India. 12 December 1998. Archived from the original on 1 May 2011.
[5]. Kling, Blair B. (1976), "The Fall of the Union Bank", Partner in Empire: Dwarkanath Tagore and the Age of Enterprise in Eastern India, University of California Press, ISBN 9780520029279
[6]. Cooke, Charles Northcote (1863) The rise, progress, and present condition of banking in India. (Printed by P.M. Cranenburgh, Bengal Print. Co.)
[7]. Radhe Shyam Rungta (1970). The Rise of Business Corporations in India, 1851–1900. CUP Archive.. GGKEY:NC1SA25Y2CB.
[8]. H. K. Mishra (1991). Famines and Poverty in India. APH Publishing. ISBN 978-81-7024-374-8.
[9]. Muthiah S (2011). Madras Miscellany. Westland.. ISBN 978-93-80032-84-9